

# शेमुषी भाग 2 (कक्षा 10)

विस्तृत अध्ययन नोट्स (Detailed Notes & Summaries)

Schorbit

# प्रथमः पाठः - शुचिपर्यावरणम् (पद्य)

## 1. पाठ परिचय

यह पाठ आधुनिक संस्कृत कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा के रचना-संग्रह 'लसल्लतिका' से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों (Metropolitan cities) के बढ़ते हुए प्रदूषण पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है और शुद्ध पर्यावरण की कामना की है।

## 2. मुख्य भाव एवं श्लोक अर्थ

कवि कहता है कि यहाँ (महानगरों में) जीवन जीना बहुत कठिन हो गया है, इसलिए अब केवल 'शुचिपर्यावरणम्' (शुद्ध पर्यावरण) ही हमारा एकमात्र आश्रय है।

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।  
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्॥

**अर्थ:** महानगरों के बीच में रात-दिन चलता हुआ लोहे का पहिया (मशीनें/वाहन) मन को सुखाता हुआ और शरीर को पीसता हुआ हमेशा टेढ़ा घूम रहा है। इसके भयानक दाँतों से मानव का विनाश न हो जाए!

**प्रदूषण के प्रकार:**

- वायु प्रदूषण:** सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ काजल के समान काला धुआँ छोड़ रही हैं।
- ध्वनि प्रदूषण:** वाहनों की अनंत पंक्तियाँ दौड़ रही हैं और रेलगाड़ियाँ शोर मचा रही हैं, जिससे पैदल चलना भी मुश्किल है।
- जल एवं मृदा प्रदूषण:** वायुमंडल, जल और धरती सब कुछ बुरी तरह दूषित हो चुका है। खाने-पीने की चीज़ों में बुरी चीज़ों की मिलावट है।

### 3. कवि की इच्छा

कवि चाहता है कि वह इस कोलाहलपूर्ण नगर से बहुत दूर किसी गाँव की सीमा पर स्थित जंगल में चला जाए, जहाँ वह नदी, झरने और तालाबों को देख सके। वह कुछ समय के लिए एकांत जंगल (एकान्ते कान्तारे) में घूमना चाहता है। वह पक्षियों की चहचहाहट से गूँजते हुए वन प्रदेश में रहना चाहता है ताकि उसे वास्तविक शांति मिल सके। कवि मनुष्यों के लिए जीवित रहते हुए जीवन की कामना करता है, न कि मृत्यु की ("मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्")।

Scholarbit